फ़ज़ाईल शब-ए-बरात

अज़

जज़ील अहमद असद उलक़ादरी



मिन्जानिब :

मकतबा ज़ियाउल ईमान

दिल्ली दरवाज़ा, सम्भल

३ अमी

नाम किताब	:	फज़ाइल-ए-शबे बरात
मुअल्लिफ	:	जज़ील अहमद असद उल क़ादरी
हस्ब फरमाइश	:	मुहम्मद अख़तर रज़ा क़ादरी
इशाअत बार अव्वल	:	1100
इशाअत बार दोम	:	1000
नाशिर	:	मकतबा ज़ियाउल ईमान देहली दरवाज़ा सम्भल

-: मिलने के पते :-

- मकतबा ज़ियाउल ईमान देहली दरवाज़ा संम्भल
- फारुक़िया बुक डिपो जामा मस्जिद दिल्ली
- क़ादरी बुक डिपो नौमहला मस्जिद बरेली शरीफ उ.प्र.
- अशरफी किताब घर नख़ासा सम्भल उ.प्र.
- हाशिर बुक डिपो दरीबा चमन सराए सम्भल उ.प्र.

निगाहे अव्वलीं

نحمدہٗ ونصلی ونسلم علیٰ حبیبہ الکریم

अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला का बेशुमार शुक्र व एहसान है जिसने अपने लुत्फ़ व करम और फज़ले अज़ीम से मुझे इस मुख्तसर रिसाले की तरतीब व तालीफ की तौफीक़ मरहमत फरमाई और हज़ारों हज़ार लाखों लाख करोड़ों करोड़ बे हिसाब बेशुमार दुरूद व सलाम उस अहमद व महमूद मुस्तफा जाने रहमत शम ए बज़्मे हिदायत नौबहार शफाअत नौशए बज़्मे जन्नत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिनकी निगाहे इनायत ने इस हक़ीर ज़र्रए बेक़दर को ख़िदमते दीन व मिल्लत की सआदत का शर्फ अता किया।

जिस तरफ उठ गई दम में दम आ गया।
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम।।

एक अर्से से अहबाबे एहले सुन्नत व अरबाबे मुहब्बत का इसरार था कि एक आम फहम रिसाला हालात व ज़रूरत के पेशे नज़र शबे बरात से मुताअल्लिक़ में तरतीब दूँ। जिसमें शबे बरात के फज़ाइल व मसाइल, नवाफिल व मशाग़िल और इस मुबारक रात की अफज़लियत व इफादियत मामूलाते अहले सुन्नत हल्वा फातिहा की शरई हैसियत और आतिश बाज़ी जैसी खुराफात नौजवानों का गश्त बे सबब चलत फिरत नाशाइस्ता ग़ैर इस्लामी हरकात का रद्द व इबताल हर एक की शरई हैसियत का ज़िक्र किया जाए। मुहिब्बीन व मुताल्लिक़ीन की फहमाइशा के बावजूद में अपनी गूँ ना गूँ मसरूफ़ियात और अज़दहामेकार हुजूमे इफ़कार की वजह से इस हुक्म की बजा आवरी से क़ासिर रहा। आख़िर अहबाब की पासे ख़ातिर ने मजबूर किया और क़लम व काग़ज़ संभाला और यह सोच कर लिखना शुरू किया।

اسعی منی والا تمام من اللہ۔ الحمد للہ علی احسانہ

और लिखते लिखते शौक़ ने दफतर किए रवाँ
इफराते इशतियाक़ ने आखिर बढ़ाई बात।

यह रिसाला बनाम फज़ाइल ए शबे बरात तरतीब दिया जो पिछले साल शबे बरात ही के मौक़े पर छपा और लोगों की नज़र कर दिया गया। अल्हम्दु लिल्लाह मेरी इस कोशिश को अहबाब एहले सुन्नत ने पसन्द किया और हाथों हाथ लिया और मेरी तवक़्क़ो से कहीं ज़्यादा पज़ीराई की और बहुत से अहबाब ने इसको हिन्दी रसमेख़त में इशाअत का मुतालबा किया लिहाज़ा कारिईन की फहमाइश के मुताबिक़ अब फज़ाइले शबे बरात का नया एडिशन उर्दू के साथ हिन्दी में भी किया जा रहा है। ताकि हिन्दी जानने वाले हज़रात भी इससे फायदा उठा सकें दुआ है कि अल्लाह तआला मक़बूले अनाम और नाफए आम बनाए। आमीन

हमारे कुछ क़ारिईन ने मुतालबा किया कि जब शरीयत का हुक्म यह है कि जिन लोगों के ज़िम्मे फर्ज़ नमाज़ों की क़ज़ा बाक़ी है। वह बजाए नफिल के फर्ज़ नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ें तो बहतर होगा। अगर क़ज़ाए उमरी और क़ज़ा नमाज़ों से मुताल्लिक़ ज़रूरी अहकाम और क़ज़ा नमाज़ों के अदा करने का आसान तरीक़ा भी बता दिया जाए।

हालांकि यह एक अलग उनवान है लेकिन बहुत से लोग जिनके ज़िम्मे फर्ज़ नमाज़ों की क़ज़ा होती है वह शबे बरात में नफिल पढ़ते हें और अपनी क़ज़ा नमाज़ों की अदाएगी की परवाह नहीं करते हज़रत अल्लामा शैख़ मुहक़्क़िक़ सय्यदी शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अलयहिर रहमत व रिदवान ने अवारिफ शरीफ़ में हज़रत सय्यदी ख़वास अलयहिर रहमत व रिदवान से नक़ल फरमाया।

بلغنا ان اللّٰه لا يقبل نافلة حتىٰ يؤدى فريضة يقول الله تعالىٰ مثلكم كمثل العبد السؤبداء بالهدية قبل قضاء الدين۔

(फतावा रिज़विया जि. 4, सुफा 437)

लिहाज़ा इस मसअले की ज़रूरत और एहमियत को ध्यान में रखते हुए कज़ा नमाज़ों के कुछ मसाइल का इज़ाफा कर दिया गया है। नाज़िरीन हज़रात से गुज़ारिश है कि इस रिसाले में शौकते अलफाज़ जिद्दते तराकीब नुदरते मानवी अदबी चाशनी नहीं है सादा आम फहम अलफाज़ आसान तरज़ेब्यान व सलीस ज़बान में दावते फिक्र कसरते ज़िक्र तलबे ख़ैर व इन्सदादेशर (बुराई को रोकना) की मुअद्दिबाना गुज़ारिश की है गर कुबूल अफतद ज़हे इज़्ज़ो शरफ।

एतराफ़े इज्ज़

साहिबान इल्म अहबाबे मुहब्बत से मुलतजी हूँ की मुझे अपनी इल्मी कम मायगी व तहिदस्ती का एतराफ है अगर ज़ेरे नज़र रिसाले में ग़लतियाँ पाएं तो इन्दल्लाह फकीर क़ादरी को मुत्तला फरमाकर ममनून व मशकूर फरमाएं ताकि आइन्दा एडिशन में दुरुस्त की जा सके।

हदियए तशक्कुर व इमतनान : हक़ नाशनासी होगी अगर अपने मुहसिनीन व मुहिब्बीन का शुक्रिया अदा न करूँ, लिहाज़ा मैं अपने तमाम क़ारिईन व मुहिब्बीन का समीमे क़ल्ब से शुक्रिया अदा करता हूँ, जिन्होंने मुहब्बत से मुताला किया मुफीद मशवरों से नवाज़ा अपने खुलूस से हदियए तहनियत व तबरीक से नवाज़ा और हौसला अफज़ाई की मौलातआला सब को जज़ाए ख़ैर अता फरमाए। और इन्तहाई ममनून व सिपास गुज़ार हूँ ब्रादरे तरीक़त मुहिब्बे एहले सुन्नत मुहम्मद अख़तर रज़ा क़ादरी साहब का जिन्होंने मुसलसल जद्दो जिहद करके किताबत व तबाअत के मुश्किल मराहिल से नबर्द आज़मा होकर फज़ाइले शबे बरात को हमारे अज़ीज़ क़ारिईन तक पहुँचाया, मौला तआला सबको दारैन की सर फराज़ियाँ व कामरानियाँ अता फरमाए और मसलके एहले सुन्नत पर इसतक़ामत अता फरमाए और सिहत व आफ़ियत के साथ दारैन की करामतों से नवाज़े।

आख़िर में तमाम नाज़िरीन से दुआ का तालिब हूँ जो इस

रिसाले से इसतफादा करें फक़ीर क़ादरी को दुआओं में याद रखें, मौला तआला मुझे बेश अज़वेश दीनी व इल्मी ख़िदमात की तौफीक़ मरहमत फरमाए और मेरी इस काविश को कुबूल फरमाकर आम मुसलमानों के लिए हिदायत व निजात का ज़रिया बनाए और मुझ गुनहगार ख़ाती व आसी के लिए ज़ादे आख़िरत और सामाने बख़शिश व मग़फिरत फरमाए आमीन।

بجاہِ نبیک و حبیبک سید المرسین صلی اللّٰہ تعالیٰ علیہ و آلہٖ و اصحابہٖ اجمعین

जज़ील अहमद असद उल क़ादरी
8 जमादिउल आख़िर हि. 1436
मुताबिक़ 29 मार्च 2015 बरोज़ हफ्ता
सम्भल यू.पी.

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمَلِكِ الْجَلِيْلِ اَلَّذِىْ اَطْفٰى نَارَ اِبْرَاهِيْمَ الْخَلِيْلِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ الْجَمِيْلِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الَّذِيْنَ فَازُوْا بِاَلَاجِرِ الْجَزِيْلِ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ط

तरजुमा – और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला

शाबानुल मौअज़्ज़म की फ़ज़ीलत

शाबान इस्लामी साल का आठवां महीना है। और यह मुबारक महीना करीमत्तरफैन है (दोनो तरफ़ इज़्ज़त वाला) इससे पहले रजब शरीफ़ का महीना है। और इसके बाद रमज़ान का मुबारक महीना है। और दोनों महीने (रजब व रमज़ान) अज़मत, बरकत, इज़्ज़त व शरफ़ वाले हैं।

हुज़ूर पूर नूर صلی اللہ علیہ وسلم (सललल्लाहो अलयहे वसल्लम) इस मुबारक महीने में बहुत ज़्यादा रोज़े रखते थे। उम्मुलमोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाह अन्हा फरमाती हैं।

كَانَ يَصُوْمُ شَعْبَانَ كُلَّهٗ وَكَانَ يَصُوْمُ شَعْبَانَ اِلَّا قَلِيْلًا

(मिशकात शरीफ़) हुज़ुरे पाक صلی اللہ علیہ وسلم शाबान उल मुअज़्ज़म का कभी पूरे महीने ही रोज़े रख़ते और कभी ज़्यादा दिनो के रोज़े रखते और कुछ दिनो के रोज़े छोड़ देते इसी तरह इस ख़ैर वाले महीने को यह इज़्ज़त शरफ़ भी हासिल है की सरकारे मदीना सुरुरे क़ल्बो सीना हुज़ूरे अनवर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फरमाया :-

شَعْبَانُ شَهْرِىْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللّٰهِ

तरजुमा : शाबान मेरा महीना है और रमज़ान اللہ تعالیٰ عزوجل (अल्लाह तआला अज़्ज़ावजल) का महीना है। महीने, साल, दिन, घन्टे, मिनट, सेकिन्ड सब اللہ تعالیٰ عزوجل ही के है और उसकी अता (देने) से सब कुछ उसके प्यारे हबीब صلی اللہ علیہ وسلم का है।

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहले सुन्नत फ़ाज़िल बरेलवी अलयहिर्रहमत व रिदवान फरमाते हैं

खालिके कुल ने अपको मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आपके कब्ज़ओ इख़्तयार में

और उस्तादे ज़मन अल्लामा हसन रज़ा बरेलवी रहमतुल्ला तआला अलयहि फरमाते हैं।

यह इनाम है मुस्तफ़ा पर खुदा का
कि सब कुछ खुदा का हुआ मुस्तफ़ा का

ग़रज़ जब महीने साल दिन घन्टे मिन्ट सेकिन्ड सब अल्लाह तआला जल्लाह तआला जल्लाजलालह व अम्मा नवालह और उसके हबीब पाक साहिब लौलाक के हैं तो फिर शाबान को अपनी तरफ़ ख़ास निसबत करने से क्या मुराद है। एक तो ज़ाहिर वजह यह है कि इस महीने को शरफ़ अता फ़रमाना मक़सद है। क्यूंकि जो चीज़ भी सरकार से निसबत पाती हैं शरफ़ वाली हो जाती है। सरकार صلی اللہ علیہ وسلم शरफ़ वाले हैं सरापा शरफ़ है इज़्ज़त व शरफ़ तो उनके क़दमे पाक से वाबस्ता है लिहाज़ा इस महीने को अपना बता कर शरफ़ वाला बताया ।

दूसरी वजह यह हे कि इस महीने की निसबत अपनी तरफ़ करकें इस मुबारक महीने के ख़ास फ़ैज़ान और इनाम से उम्मत को फायदा और फ़ैज़ हासिल करने के लिए ध्यान दिलाना था ताकि अपने नबी पाक का इरशाद सुनकर ग़ाफ़िल लोग भी ध्यान दें और इस महीने की क़दर करके ज़्यादा से ज़्यादा सवाब हासिल कर सकें।

तीसरी वजह यह है कि इस तरफ़ तवज्जा दिलाना मक़सूद हो कि रमज़ान शरीफ़ की इबादत ख़ास اللہ تعالیٰ عزوجل ने रोज़े फर्ज़ फ़रमाकर खुद मुक़र्रर फरमा दी और कुरान करीम में ताकीद और फ़ज़ीलत बयान हुई और शाबानुल मुअज़्ज़म की फ़ज़ीलत और (इबादत करके) फायदे हासिल करने की तरग़ीब और तरीक़े खुद

सरकारे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने बयान फ़रमाए लिहाज़ा इसकी निसबत अपनी तरफ़ फरमाई।

हुजूर सय्यदिना ग़ौसे आज़म रदीअल्लाह अन्हो का फ़रमान

हुजूर ग़ौसे आज़म महबूब सुबहानी सय्यदिना शाह अब्दुल क़ादिर मुहीउद्दीन जिलानी रदीअल्लाह अन्हो ने फ़रमाया शाबान में पाँच हर्फ़ हैं (शीन, ऐन, बा, अलिफ़, नून) हर हर्फ़ एक फ़ैज़ान लेकर आता है और इशारा करता है (शीन) शराफ़त (ऐन) उलू व बुलन्दी (ब) बिर यानी नेकी (अलिफ़) यानी मुहब्बत अखुब्बत और (नून) नूर लेकर आता है गोया इस महीने में शरफ़, बुलन्दी, नेकी, मुहब्बत व उलफ़त और नूर का नुजूल होता है।

खुश नसीब है वह मुसलमान जो इस महीने की बरकतों से मालामाल हो।

शबे बरात

शाबान की पंद्रहवी रात का नाम शबे बरात यानी निजात वाली रात है। इस मुबारक रात के चार नाम हैं।

(1) निजात वाली रात - لَيْلَةُ الْبَرَاءَةْ
(2) रहमत वाली रात - لَيْلَةُ الرَّحْمَةَ
(3) बरकत वाली रात - لَيْلَةُ الْمُبَارَكَة
(4) परवाना मिलने चैक मिलने वाली रात - لَيْلَةُ الصَّك

कुरान पाक में अल्लाह जल्लाजलालहू व अम्मा नवालुहू इरशाद फरमाता है। فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ

तरजुमा : इस (रात) में बांट दिया जाता है (हमारे हुक्म से) हर हिकमत वाला काम (पारा 25 सूरत अद्दुखान आयत4 रुकू 14)

इस रात में हमारे हुक्म से हर हिकमत वाला काम बांट दिया जाता है।

हज़रात मुफससरीन किराम (कुरान की तफ़सीर ब्यान करने वाले) फरमाते हैं अल्लाह तबारक व तआला साल भर में होने वाले तमाम कामों (वाक़यात व हादिसात) के अहकाम फ़िरिश्तों में तक़सीम फरमा देता है रिज़्क़, मौत, ज़िन्दगी इज़्ज़त, ज़िल्लत, ज़लज़ले, सवाइक़ (बिजली की कड़क) आसमानी अज़ाब ख़स्फ व मस्ख़ (ज़मीन का धसना सूरतें बदलना) सैलाब मुसीबतें परेशानियां ग़रज़ सारे काम जो साल भर तक ज़ाहिर होंगे वह मलायका में उनकी डयूटी के मुताबिक तक़सीम फ़रमा देता है। और तमाम इन्तज़ामी उमूर (हुक्म) लौहे महफ़ूज़ से फरिशतो के सहीफ़ो में नक़्ल करके हर एक सहीफ़ा उस महकमें के फरिशते को दे दिया जाता हे। जैसे मलिकुल मौत हज़रत इज़राइल अलयहिस्सलाम को तमाम मरने वालो की फ़हरिस्त व अहकाम वग़ैराह (रुहुलबयान ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

फ़ायदा :- इस से मालूम हुआ कि उलूमेग़ैबिया (ग़ैब का इल्म) बल्कि ख़ास उलूमे ख़मया (पांच ख़ास इल्म) पर फरिश्तो को साल भर पहले ख़बर दे दी जाती है। तो अगर اللہ تعالیٰ عزوجل अपने महबूब को ग़ैब के इल्म पर आगाह फरमादे तो एतराज़ नहीं हो सकता।

इस आयत मुबारक से मालूम हुआ कि शबे बरात बहुत ख़ास रात है। अल्लाह तआला अपने बन्दो की रोज़ी और उनकी मौत और पैदाइश लड़ाईयाँ ज़लज़ले और हादिसात साल भर में होने वाले तमाम मामले और ख़ास वाक़यात के अहकाम इसी रात अलग अलग बांट कर अलग अलग काम के फ़रिश्तो को उनका काम सौंप देता है जिस हुक्म के मुताबिक वह साल भर तक काम करते रहते हैं। (रुहुलबयान, सावी शरीफ़)

रहमते इलाही की निदाएं

रहमते आलम नबी-ए-अकरम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि इस रात को اللہ تعالیٰ عزوجل सूरज छुपने के वक़्त से आसमाने दुनिया

पर नुजूले इजलाल (यानी आसमाने दुनिया की तरफ़ अपने करम की ख़ास तजल्ली फरमाता है।) फरमाकर इरशाद फरमाता हैं कि है कोई बख़शिश मांगने वाला कि मैं उसको बख़्श दूं क्या है कोई रोज़ी मांगने वाला कि मैं उसे रोज़ी अता करुं, क्या है कोई मरीज़ बीमारियो से शिफ़ा चाहने वाला कि मैं उसको शिफ़ा दूँ क्या है कोई बला में मुबतला कि मैं उसे आसानी अता करुं, क्या है कोई ऐसा क्या है कोई ऐसा इसी तरह की निदायें लगातार होती हैं यहाँ तक कि फज्र तुलू होती है (इबने माजा)

शबे बरात बखशिश व मग़फ़िरत

हुज़ूरे पाक صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि اللہ تعالیٰ عزوجل शाबान की पंद्रवहीं रात में आसमाने दुनिया पर तजल्ली फरमाता है और क़बीला बनी कल्ब की तमाम बकरियां के बालों की तादाद से भी ज्यादा बन्दों की मग़फ़िरत (बखशिश) फ़रमाता है।

शबे बरात की इबादत की अज़मत

रिवायत है कि एक बार हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम एक पहाड़ पर पहुंचे वहाँ एक खूबसूरत गुम्बद जैसा बुलन्द पत्थर देखा आप हैरत से उसके चारों तरफ़ घूम कर देखने लगे اللہ تعالیٰ عزوجل ने वही नाज़िल फ़रमाई क्या आप चाहते हैं कि इस पत्थर का राज़ आप पर ज़ाहिर कर दूँ? हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ कि इलाही मेरी तमन्ना तो यही है अल्लाह तआला के हुक्म से वह पत्थर फट गया आपने देखा कि एक आदमी इबादत कर रहा है और उसके पास ही एक अंगूर की बेल है और एक नहर जारी है। उस आदमी ने बताया कि यही अंगूर मैं हर रोज़ खाता हूँ और इस नहर का पानी पीता हूँ और अल्लाह की इबादत करता हूँ।

हज़रत ईसा अलेयहिस्सलाम ने पूछा तुम इस पत्थन में कितने दिनों से इबादत करते हो? उसने कहा कि चार सौ बरस से यह सुनकर हज़रत ईसा अलयहिस्सलाम ने कहा कि ऐ अल्लाह तआला शायद इस आदमी जैसी इबादत तो तेरे किसी बन्दे से नहीं होगी? اللہ تعالیٰ عزوجل ने फ़रमाया कि ऐ ईसा मेरे हबीब صلی اللہ علیہ وسلم का

जो उम्मती शाबान की पंद्रहवी रात में दो रकत नमाज़ पढ़ेगा वह इस की चार सौ बरस की इबादत से बेहतर होगा यह सुनकर हज़रत ईसा अलयहिससलाम ने दुआ की ऐ अल्लाह तआला मुझे हज़रत मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم की उम्मत में दाखिल फरमाले।
(नुज़हतुलमजालिस रौदुलअफ़कार)

शबे बरात और इरशादात ए मुस्तफा صلی اللہ علیہ وسلم

हदीसः-1 عَنْ اَبِیْ بَکْرِنِ الصِّدِّیْقِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قُوْمُوْا لَیْلَۃَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ فَاِنَّمَا لَیْلَۃٌ مُّبَارَکَۃٌ فَاِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی یَقُوْلُ فِیْہَا ھَلْ مِنْ مُّسْتَغْفِرٍ فَاَغْفِرُلَہٗ۔

तरजमाः हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदीअल्ला तआला अन्हु से रिवायत है फरमाया कि इरशाद फरमाया रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि ऐ लोगो शाबान की पन्द्रहवी रात को उठो बेशक शाबान की पन्द्रहवीं रात लइलतुल मुबारकह (बरकत वाली) है पस बेशक अल्लाह तआला अज़्जवजल्ला इस रात इरशाद फरमाता है क्या कोई मुझ से बख़शिश व मग़फिरत का चाहने वाला है कि मैं उसकी मग़फिरत कर दूँ।

हदीसः-2 قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ طُوْبٰی لِمَنْ یَّعْمَلُ فِیْ لَیْلَۃِ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ خَیْرًا۔

तर्जमाः- रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खुश खबरी है उस शख़्स के लिए जो शाबान की पन्द्रहवीं शब में अमल ए ख़ैर करे।

हदीसः-3 قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللّٰہَ یَرْحَمُ عُصَاۃَ اُمَّتِیْ فِیْ لَیْلَۃِ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ بِعَدَدِ شَعُوْرِ اَغْنَامِ بَنِیْ کَلْبٍ وَ رَبِیْعٍ وَّمُضَرٍ۔

तरजमाः- बेशक अल्लाह तआला अज़्ज़ावजल्ला महर बानी फ़रमाता है मेरी उम्मत के गुनहगारों पर शाबान की पन्द्रहवीं रात

(शबे बरात) में कबीला बनी कल्ब व क़बीला रबी और मुदिर की बकरियों के बालों की तादाद के बराबर लोगों की बख़्शिश व मग़फिरत फरमाकर।

फायदाः- बनी कल्ब, रबी और मुदिर यह अरब के तीन मशहूर क़बीले हैं इन तीनों क़बीलों के पास बहुत ज़्यादा बकरियाँ थी रिवायत है कि इन में के हर एक क़बीले के लोगों की बकरियों की तादाद बीस हज़ार से ज़्यादा थी। इस इरशाद से मुराद यह है कि इस मुबारक रात की बरकात इस क़दर ज़्यादा है कि अल्लाह तआला अज़्ज़ावजल्ला उम्मत के गुनहगारों की इतनी बड़ी तादाद को बख़्शिश व मग़फिरत अता फरमाता है जो बेशुमार और बे हिसाब है।

हदीसः-4 قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ صَامَ یَوْمَ الْخَامِسِ عَشَرَ مِنْ شَعْبَانَ لَمْ تَمَسَّہُ النَّارُ اَبَدًا.

तर्जमाः- रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने शाबान की पन्द्रह तारीख़ का रोज़ा रखा उसको कभी आग न छुएगी।

ग़रज़ शबे बरात की फज़ीलत ज़िक्र अज़कार व मग़फिरत और बख़्शिश के एतबार से बहुत ज़्यादा है। ऐ काश हमारे मुसलमान भाई इस रात की अज़मत को समझते हुए अच्छे-अच्दे अमल की तरफ ध्यान दें और बुराइयों से बचे और उन लोगों के बहकावे में न आऐं जो इस मुबारक रात की फज़ीलत और बरकतों का इनकार करते हैं। और उनकी ज़बानें अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला के ज़िक्र की लज़्ज़त से ना आशना हैं।

दुखती हुई आँखों को बुरा लगता है सूरज
बीमार ज़बानों को बुरा लगता है पानी

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ الْاِشْتِغَالَ بِمَا تُقَرِّبُنِیْ اِلَیْکَ یَا کَرِیْمُ یَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْاِکْرَامِ ط

शबे बरात में सौ (100) रकआत की फ़ज़ीलत

रहमते आलम नबी-ए- अकरम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इस रात में एक सौ रकआत नमाज़ नफ़िल पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके पास एक सौ फरिश्तों को भेजेगा। तीस फ़रिश्ते उसको जन्नत की बिशारत (ख़ुशख़बरी) देंगे और तीस फ़रिशते उसको जहन्नम से बेख़ौफ़ होने की ख़ुशख़बरी देंगे और तीस फ़रिशते दुनिया की आफ़तों से उसको बचाते रहेंगे और दस फ़रिशते इसको शैतान के फ़रेब से बचाते रहेंगे। (सावी शरीफ़)

शबे बरात में ताजदारे मदीना صلی اللہ علیہ وسلم *का अमल*

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रदिअल्ला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने देखा हुज़ूर अलयहिस्सलातो वस्सलाम बक़ीउल ग़रक़द (मदीना मुनव्वरा का कब्रिस्तान) में तशरीफ़ ले गये और मुसलमान मर्दो औरतों और शहीदों के लिए दुआ फ़रमाई (मासबता मिनस सुन्नह)

फिर कब्रिस्तान से वापस आकर नमाज़ में मशगूल हो गए और सजदे में बहुत देर तक आप अपने रब अज़्ज़ावजल से आहिस्ता आहिस्ता यह दुआ करते रहे।

اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰی نَفْسِكَ اَقُوْلُ كَمَا قَالَ اَخِیْ دَاوٗدُ اَعْفِرُ وَجْهِیْ فِی التُّرَابِ لِسَيِّدِیْ وَحُقَّ لَهٗ اَنْ يُسْجَدَ ط

तरजुमा : पनाह माँगता हूँ मैं तेरी रज़ा के साथ तेरे ग़जब से और पनाह माँगता हूँ मैं माफी के साथ तेरे अज़ाब से और तुझसे तेरी ही पनाह लेता हूँ मैं तेरी कमा हक़्क़हू तारीफ की ताक़त नहीं रखता हूँ तेरी ज़ात वैसी है जैसी तूने खुद अपनी तारीफ़ की है मैं वही कहता हूँ जो मेरे भाई दाउद अलयहिस्सलाम ने कहा मैं ख़ाक आलूदा करता हूँ अपने चहरे को अपने मौला के लिए और वह इसी लायक है कि उस को सजदा किया जाए। फ़िर हुज़ूर अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने

सजदे से सर उठाकर देर तक यह दुआ की

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ الۡعَفۡوَ وَالۡعَافِیَةَ وَالۡمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَةِ

तरजुमा : ऐ अल्लाह मैं तुझसे दर गुज़र और आफ़ियत और हमेशा मुआफी की दुनिया और आख़रत में दुआ करता हूँ

इस रात में औलियाए किराम और उलमाएदीन के मामूलात।

1. नमाज़ मग़रिब के बाद छः रकात नमाज़ नफिल पढ़े हर दो रकात पर सलाम फेरें और हर दो रकात के बाद सूरे यासीन एक बार या قُلۡ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) 21 बार पढ़े पहली बार यासीन शरीफ दराज़ी उम्र के लिए पढ़े कि अल्लाह तआला उम्र में बरकत दे दूसरी बार रिज़्क की तरक्की के लिए कि अल्लाह पाक रिज़्क में बरकत व कुशादगी अता फरमाए तीसरी बार बला व वबा के दूर होने के लिए पढ़े कि अल्ला हर वबा व बला को दफ़ा फरमाए फिर निस्फ़ शाबान की दुआ पढ़े।

और शबे बरात के दिन 14 शाबानुल मुअज़्ज़म को सूरज गुरुब होने से पहले गुस्ल करना बला व सहर जादू और वबा से निजात का मुजिब है और बेहतर यह है कि बेरी के सात पत्ते पीसकर या उबाल कर पानी में मिलाए फिर उस पानी से गुस्ल करें इमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आला हज़रत कुद्दससिररहुल अज़ीज़ और सय्यदी मुरशिदी सरकार मुफ़्ती आज़म हिन्द अलयहिरहमत वरिदवान का इस पर अमल था हज़रत मुफ़्ती क़ाज़ी अब्दुररहीम बस्तवी रहमतुल्ला अलयहे ने मजमूआ ए आमाल रज़ा में ज़िक्र फ़रमाया है। और बेहतर यह है कि शाबानुल मुअज़्ज़म की 14 तारीख़ को अपने मुसलमान भाईयो के हुकूक़ को माफ़ कर दें और उनसे अपने हुकूक़ माफ़ करा लें ताकि ज़िम्म से हुकूकुल इबाद साक़ित हो जाए और मुसलमान भाईयो को चाहिए कि मुसलमान भाई माज़रत लाए तो कुबूल करें और दिल से माफ़ कर दें। हदीस शरीफ़ में है जिसके पास उसका मुसलमान भाई माज़रत लाए वाजिब है कि कुबूल कर ले वरना हौज़े कौसर पर आना न मिलेगा।

दुआ निस्फ शाबानुल मुअज़्ज़म

اَللّٰھُمَّ یَاذَاالْمَنِّ وَلَایُمَنُّ عَلَیْہِ ط یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ط یَاذَاالطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط لَآاِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ ظَھْرَ الَّا جِیْنَ ط وَجَارَ الْمُسْتَجِرِیْنَ ط وَاَمَانَ الْخَائِفِیْنَ اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ کَتَبْتَنِیْ عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ الْکِتَابِ شَقِیًّا اَوْمَحْرُومًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْمُقَتَّرًا عَلَیَّ فِی الرِّزْقِ ط فَامْحُ اللّٰھُمَّ بِفَضْلِکَ شَقَاوَتِیْ وَحِرْمَانِیْ وَطَرْدِیْ وَاقْتِتَارَرِزْقِی ط وَاَثْبِتْنِی عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ الْکِتَابِ سَعِیْدًا مَرْزُوقاً مُّوَفَّقاً لِّلْخَیْرَاتِ ط فَاِنَّکَ قُلْتَ وَقَوْلُکَ الْحَقُّ ط فِیْ کِتَابِکَ الْمُنْزَلِ ط عَلٰی لِسَانِ نَبِیِّکَ الْمُرْسَلِ ط یَمْحُوا اللّٰہُ مَایَشَآءُ وَیُثْبِتُ وَعِنْدَہٗ اُمُّ الْکِتٰبِ ط اِلٰھِیْ بِالتَّجَلِّی الْاَعْظَمِ ط فِیْ لَیلَۃِ النِّصْفِ مِنْ شَھْرِ شَعْبَانَ الْمُکَرَّمِ ط الَّتِی یُفْرَقُ فِیْھَا کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ وَّ یُبْرَمُ ۵ اَنْ تَکْشِفَ عَنَّا مِنَا الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَ آءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَمَآ اَنْتَ بِہٖ اَعْلَمُ ط اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَمُ ط وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط

नोट :- जो हज़रात अरबी दुआ न पढ़ सके या लफज़ो की सही अदाएगी न कर सके वह इस दुआ का तरजुमा इस तरह पढ़े जैसे दुआ माँगते है।

तरजुमा : ऐ اللہ تعالیٰ عزوجل तू ही सब पर एहसान करने वाला है तुझ पर कोई अहसान नहीं कर सकता ऐ बुजुर्गी वाले और महरबानी करने वाले और ऐ बखशिश और इनाम वाले तेरे सिवा कोई माअबूद नहीं तू ही गिरतो को थामने वाला है बे सहारो को पनाह देने वाला है और डरने वालो का सहारा है। ऐ اللہ تعالیٰ عزوجل अगर तूने मुझे अपने पास उम्मुल किताब में भटका हुआ या कम नसीब या महरूम लिख दिया है तो ऐ अल्लाह अज्जावजल अपने फ़ज़्ल से मेरी ख्वारी कम नसीबी रान्दगी और रोज़ी की कमी को मिटादे और अपने पास मुझे उम्मुल किताब मे खुश नसीब कुशादा रिज़्क और नेक कर दे बेशक तेरा यह इरशाद तेरी किताब में जो तेरे नबी मुर्सल صلی اللہ علیہ وسلم पर उतारी गई सच है कि अल्लाह तआला जो चाहता है

मिटाता है और जो चाहता है वना देता है और उसी के पास उम्मुल किताब है। या इलाहि तजल्ली ए आज़म का सदका इस निस्फ शाबान मुकर्रम की रात में जिसमें तमाम हिकमत वाले कामो की तकसीम और उनका निफाज़ होता है मेरी बलाओ को दूर कर दे मैं उनको जानता हूँ या न जानता हूँ और जिनसे तू वाकिफ़ है बेशक तू ही सबसे बेहतर और बढ़कर अहसान करने वाला है अल्लाह तआला की रहमत और सलामती हो हमारे आका मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم पर और उनकी आल और उनके सिहाबा पर आमीन सुम्मा आमीन।

फायदा : और जो चाहें दोनों जहान की बहतरी भलाई और कामयाबी की दुआ माँगें।

शबे बरात में नफिल नमाज़ और दुआऐं

उलमाए किराम ने इस मुबारक रात में नफिल नमाज़ की फज़ीलत के लिहाज़ से नफिल नमाज़े पढ़ने के कई तरीके लिखे है।

1. बाद नमाज़ ईशा बारह रकात नफ़िल पढ़े हर रकात में अलहम्दु शरीफ़ के बाद दस बार कुलहुवल्लाह शरीफ़ पढ़े और नमाज़ के बाद दस बार कलमा तोहीद, दस बार कलमा तमजीद और एक सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें।

2. इस मुबारक रात मे दो रकात नफिल इस तरह पढ़े कि अलहम्द शरीफ़ की सूरत के बाद पहली रकत में कुल या अय्युहल काफ़िरुन और दूसरी रकत में कुल हुवल्लाह शरीफ को सूरत पढ़ें। नमाज़ मग़रिब के बाद ही ज़िक्र व इबादत में लग जाए ताकि इस रात आमाल नामा अच्छे कामों से शुरू हो दुरूदे पाक खूब ज़्यादा तादाद में पढ़े कि क़बूल होने का सबब है दुआ के शुरु और आख़िर में दरुद पढ़ें अल्लाह पाक दुरुद शरीफ़ को रद्द नहीं फ़रमाता और करीम के करम से यह बात दूर है कि अव्वल आखिर को क़बूल फ़रमाए और दरमयान की दुआ रद्द कर दे औलियाए किराम दुरुद पाक को दुआ की क़बूलियत की सनद मानते हैं। दुरुद पाक के फ़ज़ाईल बहुत ज़्यादा है।

शबे बरात की मसनून दुआएं

1. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

तरजमा :- ऐ अल्लाह मैं तुझसे दर गुज़र और आफियत और हमेशा माफी की दुनिया और आखिरत में दुआ करता हूँ।

2. اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّی

तरजमा :- ऐ अल्लाह बेशक तू बहूत माफ करने वाला है माफ करने को पसन्द करता है बस तू मुझे भी माफ फरमादे।

3. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तरजमा :- या اللہ تعالیٰ عزوجل मैं तूझ से उन सब भलाइयो का सवाल करता हूँ जो तुझ से तेरे प्यारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने मांगी हैं और सब बुराईयो से पनाह माँगता हूँ जिन से तेरे प्यारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने पनाह माँगी है।

4. इसतगफार की कसरत करे बहतर है कि नवाफिल के बाद जितना ज़्यादा मुमकिन हो गुनाहों को याद करके अहसासे नदामत के साथ इसतग़फार करे या कम से कम सत्तर (70) बार पढ़े।

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ط

तरजमा :- ऐ मेरे परवरदिगार मुझे बख्श दे और मेरी तोबा कुबूल कर ले बेशक तूही बहुत बड़ा तौबा कुबूल करने वाला महरबान है। या यह इसतग़फार पढ़े कम से कम सत्तर बार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ

इस रात फातिहा का इहतमाम

यह मुबारक रात अपने मुर्दो व रिशतेदारों और बजुरगो की रूहो को सवाब पहुंचाने और फातिहा दिलाने के लिए बड़ी खास रात है। और

इस रात सवाब पहुंचाना प्यारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم की सुन्नत है। जैसा किी उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा रदीअल्ला अनहा की रिवायत गुज़शता पन्ने पर हमने नक्ल की है और हज़रत अब्दुल्लाह इबने अब्बास रदीअल्लाह अनहुमा से रिवायत है कि ईद और आशूरा और रजब के पहले जुमे के दिन और शाबान की पद्रंहवी रात यानी शबे बरात और जुमे की रात में मुर्दों की रुहें अपने घरों के दरवाज़े पर आकर पुकारती हैं कि ऐ घर वालो हमारे उपर रहम करो और महरबानी करो आज की रात में हमारे लिए कुछ सदक़ा करो क्यूंकि हम लोग ईसाले सवाब के हाजत मन्द हैं। हमारे नामा-ए-आमाल बन्द कर दिए गए और तुम्हारे नामा-ए-आमाल अभी जारी हैं बस अगर यह रुहें कुछ नहीं पाती तो हसरत और नाउम्मीदी के साथ वापस चली जाती हैं। (ईतानुल अरवाह फतावा ख़ैरिया)

शबे बरात का हल्वा

इस मुबारक रात को फातिहा के लिए हल्वा भी बनाया जाता है जिस पर कुछ लोग तरह तरह के एतराज़ भी करते हैं। शबे बरात के मौक़े पर हल्वा बनाना न तो फ़र्ज़ है। न वाजिब है और न ही नाजायज़ है न हराम है बल्कि सच्ची बात यह है कि शबे बरात में दूसरे तमाम हलाल खानों की तरह हल्वा बनाना भी एक जाईज़ और मुबाहकाम है। और अगर नेक नियत के साथ हो कि एक उम्दा और अच्दा खाना फ़कीरो और मिसकीनों और अपने अहल व अयाल को खिला कर सवाब हासिल करें और रिशतेदारों को भेजकर तोहफ़ा देने सिला रेहमी करने का सवाब हासिल करें तो यह ख़ैर और सवाब का काम है और शरअन हरगिज़ मना नहीं बल्कि अच्छा और पसन्दीदा है।

दरअसल शबे बरात पर हल्वे का दसतूर इसलिए हुआ कि यह मुबारक रात सदक़ा, खैरात ईसाले सवाब और सिला रहमी की खास रात है और इन्सान कि फितरत है कि ख़ास ख़ास मौके पर ख़ास और बहुत अच्छा खाना तैयार किया जाता है और اَلْمُؤمِنُ حُلْوٌ وَيُحِبُّ الْحَلْوَاءَ

मोमिन हलावत और मिठास वाला है और मिठास को पसन्द करता है। यह बात ज़ाहिर है कि फ़ातिहा आमतौर पर शीरीनी पर कराई जाती है लिहाज़ा मुसलमानों में फ़ातिहा के लिए हल्वा पकाने का दसतूर (चलन) हो गया फिर अवाम एहले सुन्नत अपने बुज़ुर्गों आलिमों वलियो का तरीक़ा अपनाते हैं आलिमो की नज़र में बुख़ारी शरीफ़ की हदीस आई كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ الْحَلْوَاءَ وَالْعَسَلَ यानी रसूले पाक صلی اللہ علیہ وسلم हल्वा (शीरीनी) और शहद पसन्द फरमाते थे। इन उलमाकिराम ने इस हदीस पर अमल करते हुए इस रात को फ़ातिहा के लिए हल्वा पकाया और आम मुसलमानों में रफ़ता रफ़ता इस का चलन हो गया।

जो काम शरियत में मना न हो मुबाह हो और अल्लाह तआला के मोमिन बन्दे उसे पसन्द करें अल्लाह पाक भी उसको पसन्द फरमाता है। हदीस पाक है। مَارَاٰهُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ حَسَنٌ जिसे मोमिन अच्छा समझे वह अल्लाह के नज़दीक अच्छा है। और फ़ातिहा ईसाले सवाब अच्छे बढ़िया खाने पर मुसलमान हर ज़माने में पसन्द करते आये हैं। तो यह अमल अच्छा है। हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्ला अलयह के मलफ़ूज़ात (इरशादात) में है कि हिन्दुस्तान में शबे बरात पर रोटी और हल्वे पर फ़ातिहा दिलाने का चलन है और समरकन्द व बुख़ारा में क़तलिमा पर जो एक मीठा खाना है।

अल हासिल शबे बरात का हल्वा हो या ईद की सिवईयाँ और शीर खुरमा या मुहर्रम शरीफ़ में आशूरा का खिचड़ा हो या मलीदा सिर्फ़ एक दस्तूर है और नेक नियत की वजह से ख़ैर और सवाब का काम है बुज़ुर्गाने दीन का पसन्दीदा काम होने की वजह इन्दल्लाह भी पसन्दीदा है और मुसतहसन व मन्दूब और तरीक़ -ए-महबूब है। कोई सुन्नी मुसलमान न फ़र्ज़ जानता है न वाजिब लेकिन बिना वजह किसी चीज़ या किसी अमल को नाजायज़ व हराम कहना और मना इनकार करना गुलू करना और हद से बढ़ना है जो सख़्त हराम है اللہ تعالیٰ عزوجل के किसी हलाल को हराम ठहराना अल्लाह तआला पर तोहमत लगाना है जो सख़्त हराम और बदतरीन गुनाह है कुरान

पाक में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है।

قُلْ اَرَاَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۔

(पारा ग्यारह सूरह यूनुस आयत 59)

तरजुमा : आप फ़रमाइये भला बताओ तो वह जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए रिज़्क़ उतारा उसे तुमने अपनी तरफ़ से हराम और हलाल ठहरा लिया आप फरमाइये क्या अल्लाह ने तुम्हे इसकी इजाज़त दी या अल्लाह पर झूंठ बांधते हो।

मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की हलाल चीज़ों को हराम समझना भी गुमराही और हराम चीज़ो को हलाल समझना भी गुमराही है। लिहाज़ा मीलाद शरीफ़ ग्यारहवीं शरीफ़ और बुजुर्गों की फ़ातिहा वगैराह को बिना दलील शरई हराम समझलेना गुमराही है। ऐसे लोगों को अल्लाह तआला ने फरमाया कि यह लोग अल्लाह पर झूंठ बांधते हैं। اللہ تعالیٰ عزوجل इरशाद फरमाता है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ ۔

(पारा 14 सूरह नहल आयत 116)

और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बाने झूंठ बयान करती हैं यह हलाल है और यह हराम है कि अल्लाह पर झूंठ बांधो बेशक जो अल्लाह पर झूंठ बांधते हैं उनका भला न होगा मालूम हुआ कि हलाल व हराम अपनी तरफ़ से न बनाओ अलावा उन चीज़ों के जिसे اللہ تعالیٰ عزوجل और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم ने हराम फ़रमादिया और यह भी मालूम हुआ कि बिना दलील किसी चीज़ को हराम कह देना अल्लाह तआला पर झूंठ है। जो लोग मिलाद शरीफ़ की शीरिनी, शबे बरात का हल्वा फ़ातिहा के खाने को बिना सबूत व बिना दलील के हराम कहते हैं वह झूंठे हैं। यह तमाम चीज़े हलाल हैं क्यूंकि इन्हें अल्लाह तआला और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم ने हराम नहीं फ़रमाया हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं हलाल वह जिसे अल्लाह

हलाल फ़रमाए और हराम वह जिसे अल्लाह हराम फ़रमाये और जिससे खामोशी है वह माफ़ है।

शबे बरात और गै़र शरई रुसूमात।

हिन्दुस्तान एक ऐसा मुलक है जिसमे अलग अलग मज़हब के लोग जमहूरी निज़ाम के तहत रहते हैं। और सभी अपने अपने मज़हब व मिल्लत के मुताबिक़ खुशी और ग़म की तक़रीबात मुनआक़िद करते और अपनी खुशी या ग़म का इज़हार करते हैं और मुख़तलिफ तरह की रसमें अदा करते हैं। नसरानी, हुनूद और यहूद की देखा देखी बहुत सी गै़र इस्लामी रसमें और नाजाईज़ आदतें मुसलमानो ने भी इख़तयार कीं इनमें से कुछ ना पसन्दीदा आदतें शबेबरात की मुक़द्दस व बा बरकत रात में आतिशबाज़ी की रविश और मोटर साइकलो पर गश्त गाड़ियों की रेस स्टन्ट करना हॉरन बजाना और रात भर टोलियाँ बना कर बे ज़रूरत चलत फिरत करना भी है जो इन्तहाई ना पसन्दीदा मज़मूम काम हैं। जो शरअन ना जाइज़ व हराम है और बहुत सी बुराइयों का मजमूआ और गुनाह हैं। इस्लाम एक मुहज़्ज़म और पाकीज़ा मज़हब है और हर मौक़े पर अपने मानने वालो को तहज़ीब व तादीब का दर्स देता है। तक़वा और परहेज़ गारी सिखाता है और मुकम्मल रहनुमाई करता है।

फिक़ह इसलामी किसी खुशी के पुर मसर्रत मौके पर भी इज़हारे सुरूर और मसर्रत के लिए ऐसे गै़र मुहज़्जबकामों की इजाज़त नही देता जो पुर खतर मुज़िर या नाजाइज़ व हराम हों और सलीमउत्तबा अकलमन्द इनसान के नज़दीक नापसन्द या नुक़सान का सबब हो।

इस्लामी शरीयत में किसी मुसलमान को इज़हारे मसर्रत के लिए नाजाइज़ तरीक़ा इख़तयार करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं यहाँ तक कि अगर कोई नेक काम बुरी नियत या बुरे तरीके से करना चाहे तो वह भी जाइज़ नहीं और क़ानूने शरीयत उसकी इजाज़त

नहीं देता। ग़रज इसलाम ने अपने मानने वालों को खुशी व ग़म ज़ाहिर करने के आदाब सिखाए हैं। रंजवग़म की मजलिस हो या बज़्मे तरब व मसर्रत हो एक सच्चे मुसलमान को हर हाल में इसलामी आईन व आदाब का पासदार और अहकामेशरा का पाबन्द रहना ज़रूरी है।

आजकल इस्लाम व शरीयत को ज़ुबान से पसन्द करने वालों की कमी नहीं है अलबत्ता इसलाम व शरीयत का पाबन्द रहने वालों की कमी है। पसन्द होना और बात है पाबन्द हानो और बात है। दूसरे मज़हबो के बहुत लोग इसलाम और इसलामी तालीमात को पसन्द करते हैं मगर इसलामी अहकाम और शरीयते इसलामी के पाबन्द नहीं कुफफारे मक्का हुज़ूर नबीए पाक صلی اللہ علیہ وسلم को पसन्द करते थे सादिक़ व अमीन कहते थे मगर पाबन्द न थे लिहाज़ा पसन्द होना और बात है पाबन्द होना और बात है। सिर्फ पसन्द होने से कामिल मुसलमान नहीं होता बलिक पसन्दीदगी के साथ ज़ुबान से हक़ व सदाकत का इक़रार और दिल से तसदीक और इसलामी एतक़ाद का पाबन्द होना ज़रूरी है।

यह शहादत गहे उलफत में क़दम रखना है।
लोग आसान समझते हैं मुसलमान होना

राहे रास्त सिराते मुसतक़ीम यह है कि हर खुशी व ग़मी के मौक़े पर बन्दा मोमिन अल्लाह अज़्ज़वजलला और अपने नबीए पाक अलयहित्तहीयतु वस्सना के बताए हुए तरीके कार को इखतियार करे अललाह पाक ने अपने बन्दों को अपने हबीबे पाक अलयहे तहय्यतो वस्सना और स्वालिहीन मोमिनीन के तरीक़ए अमल को इख़्तयार करने का हुक्म फरमाया और उन्ही की पैरवी को बाइसे निजात करार दिया।

अललाह तआला अज़्ज़ाव जलला इरशाद फरमाता है।
وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ج (पारा 21 आयत 15 रुकुअ 11) और

उसका रास्ता इख़्तयार कर जो मेरी तरफ रुजू लाया।
और इरशाद फरमाता है اهدنا الصراط المستقيم ऐ अल्लाह हमें सीधा रास्ता चला, صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب عليهم ولا الضالين,

उनका रास्ता जिनपर तूने अपना इनाम फरमाया न उनका रास्ता जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उनका जो गुमराह हुए। और जिन पर अल्लाह ने अपना इनाम फरमाया उनकी तफसील भी अपने करम से कुरान करीम में बयान फरमादी जिन पर इनाम व इकराम फरमाया वह अम्बिया व मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम सिद्दीक़ीन मोमिनीन औलियाऐ किराम' हैं। और उन्हीं की पैरवी करना राहे हक़ पर चलना है। और यही सीधा सच्चा रास्ता है,

तेरे गुलामों का न क़शे क़दम है राहे खुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ लेके चले।

और ज़ाहिर है कि अंबिया-ए-किराम रसूलाने इज़ाम सिद्दीक़ीन व सालिहीन उलमाए रब्बानीन औलियाए कामिलीन में किसी का अमल कभी हरगिज़ भी आग से खेलना नहीं रहा और अल्लाह तआला के किसी नेक बन्दे ने शबे बरात पर आतिश बाज़ी को पसन्द नहीं फरमाया और जब अल्लाह वालों का तरीक़ा आतिश बाज़ी से बचना है तो हमें भी इससे परहेज़ करना चाहिए और अल्लाह वालों की पैरवी करना चाहिए।

शबे बरात शुक्राने नेमत की रात है।

शबे बरात ख़ैर व बरकत, रहमत व मग़फिरत की रात है, जो अल्लाह तआला अज़्ज़वजल का इस उम्मते मरहूमा पर ख़ास इनाम व अहसान है, और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के इनाम व अहसान पर खुशी मनाना चाहिए, अल्लाह की नेमत पर खुशी मनाना शुक्राने नेमत है, बल्कि अल्लाह की नेमत व मन्नत पर इज़हारे मसर्रत मतलूबे शरा है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने शुक्र और सुरूर व मसर्रत के इज़्हार की सराहतन इजाज़त दी है अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फरमाता है:

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَخَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ۔

आप फरमा दो कि अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर खूब खुशियाँ मनाएं।

यह उनके जमा किए हुए माल से बहतर है।

अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला ने इस आयते पाक में अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर खुशी मनाने का हुक्म दिया है।

इस्लाम एक जामे व मुकम्मल दीन है उसने मुसलमानों को सिर्फ इबादत नमाज़ रोज़ा हज व ज़कात ही का हुक्म नहीं दिया बल्कि इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम शोबों पर नज़र रखी है और तमाम मआमलात में रहनुमाई की है, इन्सानी ज़िन्दगी में खुशी के मौक़े भी आते हैं और ग़म भी नादान लोग ग़म में खुदावन्द कुद्दूस को भूल जाते है और खुशी के मौकों पर फूल जाते है। इस्लाम ने सिखाया कि ग़म व रंज में क्या करें और खुशी के मौक़े पर खुशियाँ कैसे मनाए। खुशी एक तो फख़्र की है और एक शुक्र की है फख़्र की खुशी में इन्सान नफ्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करता है। और शैतानी तरीक़े इख़्तयार करता है ग़रूर व तकब्बुर के साथ नाजाइज़ काम करता है जैसे गाना नाचना ढोल बजाना नाज़ेबा हरकतें बेहूदा मज़ाक खिलाफे शरा हरकते यह सब तरीक़े ना जाइज़ हराम है इस तरह खुशियां मनाना अल्लाह अज़्ज़वजल्ला को सख़्त ना पसन्द है। और कुरान में मना फरमाया है। अल्लाह अज़्ज़वजल्ला इरशाद फरमाता है:

لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ۔

फखरिया खुशी न मनाओ अल्लाह ऐसी खुशी मनाने वालो को पसन्द नहीं करता।

शुक्राने नेमत की खुशीः शुक्र की खुशी में बन्दे की नज़र अपने मौला अज़्ज़ावजल्ला के अहकाम पर होती है और वह ऐसा कोई काम नहीं करता जिस से उसका रब नाराज़ हो और वही काम करता है जो अल्लाह और उसके हबीब को पसन्द हो इस तरह खुशी मनाना

इबादत है इसी खुशी का अल्लाह पाक ने शुक्राने नेमत और इज़हारे मसर्रत के लिए हुक्म फरमाया और इरशाद फरमाया:

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ

अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत पर खूब खुशियाँ मनाओ ग़रज़ इज़हारे मसर्रत व शादमानी नेमते इलाहिया का शुक्र है और जाइज़ व मुसतहब है बशर्ते कि शरीयत के मुवाफिक़ हो और शरीयत की हुदूद को पामाल न किया जाए।

शबे बरात का जलसा

इस मुबारक रात में कसरते दुआ कसरते ज़िक्र इसतग़फार और अपने मौला की याद में शब्बेदारी तिलावते कुरान व दुरूदे पाक की कसरत तौबा व रुजूइलल्लाह यह सब शुक्र गुज़ारी है और मतलूबे शरा है अल्लाह तआला और उसके हबीब पाक सलल्लाहो अलैहिवसल्लम की रज़ा का बाइस है इस मुबारक रात में ज़िक्र व दुआ की मजलिसों का इनइक़ाद और मिल बैठकर ज़िक्र करना एहकामे शरा जानना इसलामी तालीमात का चर्चा सब महबूब व पसन्दीदा काम हैं और अपने मौला के अहसानात व इनामात पर इज़हारे मसर्रत व शादमानी और शुक्र गुज़ारी का निहायत उम्दा तरीक़ा है। और وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰمِ اللّٰهِ اور فَاذْكُرُوْنِىْ اَذْكُرْكُمْ के तहत अल्लाह के दिनों की याद दिलाकर लोगों को उसकी तरफ मुतवज्जा करना और तुम मेरा ज़िक्र करो में तुम्हारा ज़िक्र करुंगा के मुताबिक़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत को अपनी तरफ माइल करने का बहतरीन ज़रिया है और हर ज़माने में स्वालिहीन का पसन्दीदा तरीक़ा है हदीस शरीफ है: "مَارَاٰهُ الْمُسْلِمُوْنَ حَسَنًا فَهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ حَسَنٌ" मज़कूरा ब्यान से ज़ाहिर हो गया कि फख़र व ग़रूर व इस्लामी तरीके के खिलाफ खुशी मनाना दुरुस्त नहीं जो खुशी में फूल कर अहकामे शरीयत को भूल कर यहूद व नसारा या अहले हुनूद का तरीक़ा इख़्तियार करते हैं। वह हरगिज़ हरगिज़ फलाह का तरीक़ा नहीं बल्कि यक़ीनन अल्लाह अज़्ज़वजल्ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाराज़ी का सबब है और ना जाइज़ व हराम है।

आतिश बाज़ी का शरई हुक्म

शबे बरात और दीगर खुशी के मौक़ो पर आतिश बाज़ी सख़्त हरामऔर कई वजह से हराम है। अव्वलन आतिश बाज़ी में आग का खेल है आग उछाली जाती है आग घुमाई जाती है या आग फेकी जाती है या आग नचाई जाती है और इन तमाम कामों से शैतान खुश होता है।

सानियन (दूसरे) आतिश बाज़ी के ज़रिये आदमी अपने माल को खुद अपने हाथों से जलाता है और यह अपने माल को नाहक़ बरबाद करना है और माल को नाहक़ बरबाद करना हराम है। और माल अल्लाह तआला की एक बड़ी नेमत है और इस तरह माल ज़ाए करना न सिर्फ बेक़दरी है बल्कि हक़ ना शनासी व ना शुक्री भी है।

सालिसन (तीसरे) आतिश बाज़ी बिना शक एक लग़्व व फिज़ूल काम है। जिसमें खर्च करना फिजूल है और फिजूल ख़र्च करना हराम है और शैतानी काम है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फरमाता है: وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْراً जाइज़ काम पर ज़रूरत से ज़्यादा खर्च करने को इसराफ कहते हैं और किसी काम में ना जाइज़ बे फायदा व बे मक़सद खर्च को तबज़ीर कहते हैं इसराफ भी अगरचे नाज़ाइज़ है मगर तबज़ीर पर खुदावन्दे कुद्दूस ने ज़्यादा सख़्त वईद फरमाई अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला इरशाद फरमाता है।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ط وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْراً۔

तर्जुमाः बेशक फिजूल उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।

इस आयते पाक से मालूम हुआ कि तमाम ख़िलाफ़े शरा नाजाइज़ कामों में खर्च करना माल को ज़ाए करना है और तबज़ीर व फिज़ूल खर्ची है और बे फायदा खर्च करना इज़ाअते माल है और हराम है। जिस पर बहुत सख़्त वईद है। जिस तरह अच्छे कामों में खर्च करना सवाब है ऐसे ही बुरे कामों में खर्च करना गुनाह है और यह भी मालूम हुआ कि किसी नेमत पर अहकामे शरीयत कि इताअत करना

और अल्लाह अज़्ज़वजल्ला और उसके महबूब अलयहित्त्यतो व सना के रज़ा के काम करना शुक्र गुज़ारी है और अहकामे शरीयत के ख़िलाफ करना सख़्त गुनाह और बड़ी ना शुक्री है।

मेरे अज़ीज़ शबे बरात अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला की अता की हुई एक नेमत है। इस नेमत की खुशी में शबे बरात पर अच्छे अच्छे काम करना सदक़ा व ख़ैरात ज़िक्र व अज़कार नफिल इबादात अच्छे काम हैं। और हुसूले नेमत के पुर मसर्रत मौक़े पर अपने मौला की बहतरीन शुक्र गुज़ारी और शबे बरात की सच्ची क़द्रो मन्ज़िलत है।

मोटर साइकिलों का गश्त : मोटर साइकिलों पर बेसबब व बिना ज़रूरत गश्त लगाना इसमें वक़्त की बरबादी भी है और फिज़ूल पैट्रोल फूँकना यह माल को ज़ाए करना है जो कि हराम है फिर शोर गुल करना, हॉर्न बजाना, स्टन्ट दिखाना, बेहूदा मज़ाक करना यह सब नाजाइज़ व हराम है और इस मुबारक रात की बेक़दरी और बुरी बात है।

पटाख़े छोड़ना, फुलजड़ी जलाना, अनार छोड़ना, चकई चलाना, अनार उड़ाना, चटाई जलाना और न जाने किन किन नामों से आग से खेलना शैतान को खुश करना और ख़तरात से खेलना है। दीनी व उख़रवी नुक़सान भी है माली और दुनियावी नुक़सान भी है और आतिश बाज़ी से कभी कपड़े जल जाते हैं। कभी हाथ पैर जल जाते हैं। कहीं आग लग जाती हैं और यूँ शैतान नामुराद खुश होता है। और अपनी मुराद को हासिल करता है। गरज़ यह आतिश बाज़ी ऐसा शैतानी काम है जिससे कभी-कभी बड़े हादसे हो जातेहैं या कम से कम हादसों का खतरा तो रहता ही है। खुशी में हदसे गुज़र जाना और मदहोश होकर नुक़सानात को दावत देना किसी तरह अक़्ल मन्दी का काम नहीं।

राबयनः (चौथा) एक बड़ी बुराई यह है कि आतिश बाज़ी के धमाके, और ग़ैर मानूस आवाज़ों से इबादत, ज़िक्र व अज़कार में ख़लल

वाक्य होता है, ध्यान बटता है खुशू व खुजू क़ायम नहीं रहता और शबेबरात जैसी अज़ीम मुक़द्दस रहमत व बरकत वाली रात जो खुदावन्दे क़ुद्दूस की अपने मोमिन बन्दों पर ख़ास नवाज़िशों रहमतो बरकतों और बख़शिश और मग़फिरत की रात है उसको हमारे नौजवान इन बेहूदा हरकतों और खुराफात की नज़र कर देते हैं। और बड़ी ख़ैर से महरूम रह जाते हैं और खुशबुओं से मुअत्तर होने वाली रात को गन्दक और पुटाश क्री बदबू फैलाकर फरिशतों को ईज़ा देते हैं। हदीस शरीफ में है जो चीज़ इन्सानों को ईज़ा का सबब हो उससे फरिशतों को भी ईज़ा होती है।

काश हमारे इस्लामी दीनी दुकानदार भाई अपनी और मिल्लत की दुनिया व आखिरत की भलाई के लिए आतिश बाज़ी का सामान बेचने से बचें तो यह भी बुराई से बचने बचाने में अच्छी कोशिश होगी क्यूँकि आतिशबाज़ी के सामान की ख़रीद फरोख़्त भी नाजाइज़ व हराम है।

ऐ काश हमारे इस्लामी भाई बजाए आतिश बाज़ी के यह पैसा इस मुबारक रात में गुरबा व मसाकीन पर ख़ेरात करें और बेशुमार अज्र व सवाब हासिल करें।

एक ख़ैर ख़्वाहाना गुज़ारिश

हमारे मसाजिद के अइम्मा किराम अपने जुमे के खिताब में इन मज़कूरा गुज़ारिशात को मिल्लत के सामने पेश करें और नौजवानों व बच्चों को इस नाजाइज़ काम से बचने की ताकीद करें और गलियों मुहल्लों में दुकान दारो से आतिश बाज़ी के सामान की तिजारत और ख़रीद फरोख़्त से वक़्त से पहले नर्मी से मना करें और दोस्त अहबाब को अख़लाक़ी तौर पर इसके नुक़सान व बुराई का अहसास दिलाकर मुतनब्बा करें और जिस तरह भी नर्मी से मुमकिन हो इस बुराई से रोकें और आतिश बाज़ी के इन्सदाद की हर मुमकिन कोशिश करें और दाखिले हसनात हो क्यूंकि अम्र बिल मारूफ और

नहीं अनिल मुनकर (नेकी का हुक्म देना और गुनाह से मना करना) अज़ीम नेकी है, और ऐन मतलूबे शरा है।

वालिदैन पर लाज़िम है कि अपने प्यारे बच्चों को, नौ-जवानों को हर बुराई से रोकें। हदीस शरीफ में है:

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَّ كُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ

तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से उसके मातहत के बारे में पूछा जाएगा, सवाल किया जाएगा। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हम सब को हुसने अमल की तौफीक़ मरहमत फरमाए।

ज़रुरी इन्तबाह

जिन हज़रात के जिम्मे फ़र्ज़ नमाज़े बाकी है उनपर कज़ा नमाज़ों का अदा करना फ़र्ज़ है फ़र्ज़ जब तब अदा न होगा ज़िम्मे से साक़ित (ख़त्म) न होगा ज़रुरी है कि वह पहले फ़र्ज़ नमाज़े अदा करें जो फ़र्ज़ अदा न करें और नफ़िल पढ़े तो उसका नफ़िल क़ुबूल नहीं होता आजकल आम तौर पर लोग नफ़िल पढ़ने लग जाते हैं और अपनी फर्ज़ नमाज़े अदा नहीं करते।

हज़रत सदुरश्शरिया रहमतुल्लाह अलयहि फ़रमाते हैं कज़ा नमाज़े नफ़िल नमाज़ से ज़्यादा ज़रुरी हैं जिस वक़्त नफ़िल पढ़ता है उसके बजाए कज़ा नमाज़ की अदायगी करें कि फ़र्ज़ नमाज़ उसके ज़िम्मे से अदा हो जाये हाँ तरावीह और बारह रकअतें सुन्नत मुअक्किदा की न छोड़े (बहारे शरीयत हिस्सा 4 सुफह 47) और हज़रत अल्लामा इबने आबिदीन शामी रहमतुल्ला तआला अलयहि तहरीर फ़रमाते हैं।

قال فی المضمرات الاشتغال بقضاء الفوائت اولیٰ واهم من النوافل الاسنن المفروضة وصلوٰة الضحیٰ۔ (شامی ج ۱ ص ۵۴۳)

और आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फ़ाज़िल बरेलवी अलयहिर रहमत वरिदवान फ़तूहल ग़ैब तसनीफ़ हुज़ूर सय्यदिना ग़ौसुल आज़म रदिअल्लाह तआला अनहु के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सय्यदिना मौला अली करम अल्लाह व जहुल करीम ने इरशाद

فان الشتغل باسنن والنوافل قبل الفرائض لم يقبل منه واهين फ़रमाया
यानी फर्ज़ छोड़ कर सुन्नत ग़ैर मुअक्किदा व नवाफ़िल में मशगूल होगा तो यह कुबूल न होंगे और ज़लील किया जाएगा। और शैख़ मुहक्कि अल्लामा शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी कुदस सिर्रहुल अज़ीज़ अवारिफ़ शरीफ़ के बाब सामिन वस्सलासीन में हज़रत ख़वास रहमतुल्लाह तआला अलयहि से नक़ल फ़रमाते है।

بلغنا ان اللّٰہ لا یقبل نافلة حتی یؤدی فریضة یقول اللہ تعالیٰ مثلکم کمثل العبد السؤ بداء بالھدیة قبل قضاء الدین

(फ़तावा रज़विया जिल्द 4 सुफह 437)
इमाम अहलेसुन्नत आला हज़रत अलयहिररहमतु व रिदवान एक हदीस शरीफ़ नक़ल फरमाते हैं कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं

اربع فرضھن اللّٰہ فی الاسلام فمن جاء بثلٰث لم یغنین عنه شیأً حتّٰی یأتی بھن جمیعا الصلوٰة والزکوٰة وصیام رمضان وحج البیت ۔

यानी चार चीज़े अल्लाह तआला ने इस्लाम में फर्ज़ की हैं जो इन में से तीन अदा करे वह उसे कुछ काम न दें जब तक पूरी चारों न बजा लाए नमाज़ ज़कात, रमज़ान के रोज़े और बैतुल्लाह का हज और हज़रत सय्यदिना अब्दुल्लाह बिन मसूद रदीअल्लाह तआला अनहुमा फ़रमाते हैं امرنا باقام الصلوٰة وایتاء الزکوٰة ومن لم یزك فلا صلوٰة لهٗ
यानि हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ पढ़े ज़कात दें और जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ मक़बूल नहीं जब ज़कात न देने वाले की नामज़ रोज़े हज तक मक़बूल नहीं तो उसकी नफ़िल ख़ैरात नाम की कायनात से क्या उम्मीद बल्कि इन्हीं से असबहानी की रिवायत में यूँ आया है फ़रमाते है। -من اقام الصلوٰة ولم یؤت الذکوٰة فلیس بمسلم ینفعه عمله'
यानी जो नमाज़ अदा करे और ज़कात न दे वह मुसलमान नहीं कि उसका अमलकाम आये। (फतावा रज़विया जिल्द 4 सुफह 437)

इन हदीसो और फ़ुक़हाय किराम के इरशादात से साबित हुआ कि जिसके ज़िम्मे फ़र्ज़ नमाज़े और ज़कात बाक़ी है उनकी नफ़िल नमाज़े सदक़े और ख़ैरात कुबूल न होंगे और उन पर फ़र्ज़ की कज़ा ज़रुरी है

क़ज़ा नमाज़ों का ब्यान

जिस अमल का बन्दों पर हुक्म है उसको वक़्त पर बजालाने को अदा कहते हैं। और वक़्त गुज़र जाने के बाद अमल करने को क़ज़ा कहते हैं।

क़ज़ा नमाज़ों का हुक्मः-

फर्ज़ की कजा फर्ज़ है और वाजिब की क़ज़ा वाजिब और जिन सुन्नतों की क़ज़ा का हुक्म है उनकी क़ज़ा सुन्नत है। फज्र की सुन्नतें अगर फर्ज़ के साथ क़ज़ा हो और ज़वाल से पहले पढ़े तो फर्ज़ के साथ सुन्नत भी पढ़े और अगर फज्र की फर्ज़ नमाज़ पढ़ली और सुन्नत छूट गई तो सूरज निकलने के बाद पढ़ लें और अगर ज़वाल के बाद पढ़े तो सुन्नत की क़ज़ा नहीं और ज़ुहर या जुमे के पहले की सुन्नते क़ज़ा हो गई तो फर्ज़ के बाद की सुन्नतों को पढ़ कर इन पहली सुन्नतों को पढ़े और अगर वक़्त खत्म हो गया तो कज़ा नही।

क़ज़ा नमाज़ें अदा करने का वक़्त

क़ज़ा नमाज़े अदा करने का कोइ वक़्त मुक़र्रर नहीं है उम्र भर में जब भी पढ़ेगा बरी उज़्ज़िमा हो जाएगा अलबत्ता क़ज़ा नमाज़े जल्द अज़ जल्द अदा करना चाहिए न मालूम किस वक़्त मौत आ जाए।

जिसकी पाँच या उस से कम नमाज़ें क़ज़ा हो तो वह साहिबे तरतीब है उसके लिए लाज़िम है कि क़ज़ा नमाज़े तरतीब से पढ़े चूँकि तरतीब फर्ज़ है। अगर किसी की फज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और याद होते हुए ज़ुहर की नमाज़ पढ़ ली फिर फज्र की क़ज़ा पढ़ी तो ज़ुहर की नमाज़ नहीं हुई फज्र की क़ज़ा के बाद ज़ुहर की नमाज़ का इआदा करे (दोबारा पढ़ें)।

अगर नमाज़ की अदाएगी में कोई खराबी पैदा हो जाए तो इस ख़राबी को दफा करने के लिए इस नमाज़ के दुहराने को इआदा कहते हैं। तरतीब से मुराद यह है कि फज्र ज़ुहर असर कज़ा हो गई तो पहले फज्र फिर ज़ुहर फिर असर क़ज़ा पढ़े नमाज़ की तरतीब की

फरज़ियत से जो नावाक़िफ है इसका हुक्म भूल जाने वाले कि तरह है। उसकी नमाज़ हो जाएगी जिसकी छः नमाज़े मुसलसल छूट गई एक के बाद एक या अलग अलग वक़्तों की क़ज़ा हो गई मसलन छः रोज़ फज्र की नमाज़ नहीं पढ़ी और बाक़ी नमाज़े पढ़ता रहा मगर इनके पढ़ते वक़्त वह क़ज़ा नमाज़े भूला हुआ था फिर ख्वाह वह सब नमाज़े पुरानी हों या कुछ पुरानी और कुछ नई, पुरानी मसलन एक महीने की नमाज़ें न पढ़ी फिर पढ़ना शुरू की फिर एक वक़्त की क़ज़ा हो गई तो इसके बाद की नमाज़ हो जाएगी अगरचे उसका क़ज़ा होना याद हो।

जिसकी छः या ज़्यादा नमाज़े छूट गई उस पर तरतीब फर्ज़ नहीं जब तक नमाज़े अदा न कर ले वक़्ती नमाज़ हो जाएगी, जब सब नमाज़े अदा करले फिर तरतीब फर्ज़ है अब कोइ नमाज़ क़ज़ा हो गई तो पहले क़ज़ा पढ़े फिर वक़्ती नमाज़ अदा करे क़ज़ा छोड़ कर वक़्ती पढ़ेगा तो नहीं होगी। अगर याद होते हुए वक़्ती पढ़ली तो क़ज़ा अदा करने के बाद वक़्ती नमाज़ का इआदा करे।

मुसाफिर और मुक़ीम की क़ज़ा नमाज़ों का हुक्म

जो नमाज़ जैसी फौत हुई उस की क़ज़ा वैसी ही पढ़ी जाएगी जो मुसाफिर 92 कि.मी. की दूरी के इरादे से निकला तो उस पर क़स्र वाजिब है यानी जुहर, असर और इशा की चार रकत फर्ज़ के बजाए दो रकत पढ़ी जाए, फज्र मग़रिब और वितर में क़स्र नहीं लिहाज़ा मुसाफिर की जो नमाज़ क़ज़ा हो गई और इक़ामत की हालत में सफर की क़ज़ा पढ़ता है तो जुहर, असर और इशा की दो-दो रक़त क़स्र ही पढ़े और अगर मुक़ीम की नमाज़ फौत हो गई और सफर में इक़ामत की क़ज़ा नमाज़ अदा करता है तो जुहर, असर व इशा की चार-चार रकत पढ़े।

क़ज़ा नमाज़ों की नियत का तरीक़ा

नियत दिल के पुख़ता इरादे का नाम है और ज़ुबान से कह लेना मुसतहब है अगर चन्द नमाज़े क़ज़ा हों तो जिस रोज़ जिस वक़्त की

नमाज़ क़ज़ा हुई है उस दिन और उस वक़्त की नियत ज़रूरी है मसलन पीर के रोज़ फज्र की नमाज़ क़ज़ा हुई तो इस तरह नियत करे, नियत की मैंने दो रकात नमाज़ फर्ज़ फज्र पीर के दिन की क़ज़ा अल्लाह तआला के लिए मुंह मेरा काबे शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर और अगर एक हफ्ते से ज़्यादा या महीने दो महीने या साल दो साल की नमाज़े क़ज़ा हो तो ऐसी सूरत में इस तरह नियत करें नियत की मैंने दो रकात नमाज़ फर्ज़ क़ज़ा सब से पहली फज्र की जो मेरे ज़िम्मे बाक़ी है अल्लह तआला के लिए मुंह मेरा क़ाबे शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर, इसी तरह जुहर, असर, मगरिब, इशा और वितर की नियत करें।

बहतर यह है कि क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब करके अदा करे ताकि सब नमाज़े उसके ज़िम्मे से अदा हो जाएं वरना उस वक़्त तक पढ़ता रहे जब तक यक़ीन न हो जाए कि एक नमाज़ भी उसके ज़िम्मे बाक़ी नहीं है यह हुक्म उसके लिए है जिसको क़ज़ा नमाज़ों की सही तादाद मालूम न हो और जिसको मालूम है वह उतनी ही अदा करे और सच्ची नदामत से तौबा करे अल्लाह अज़्ज़वजल्ला से कुबूल की उम्मीद रखे वह तौबा कुबूल फ़रमाने वाला महरबान है।

क़ज़ा नमाज़े अदा करने में आसानी

जिन लोगों पर बहुत सी नमाज़ों की क़ज़ा लाज़िम है उनके लिए तख़फीफ (कमी) और जल्द अदा करने का आसान तरीक़ा यह है कि जुहर, असर व इशा की आखिर की दो रकात और मग़रिब की आख़िरी एक रकत में सूरे फातिहा के बजाए सिर्फ तीन बार सुब्हान अल्लाह पढ़ ले और रुकू व सजदे में सिर्फ एक-एक बार सुब्हाना रब्बीअल अज़ीम और सुब्हाना रब्बीअल आला पढ़ लेना भी काफी है और अत्तहीयात पूरी पढ़कर दुरूद मासूरा और इस्तग़फार के बजाए اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ और वितर की क़ज़ा में बजाए दुआ क़नूत के رَبِّ اغْفِرْلِیْ पढ़ लेना काफी है। इस तरह ज़्यादा नमाज़े जल्द अदा हो जाएंगी।

इन्तक़ाल के बाद क़ज़ा नमाज़ो का फिदया

जिसकी नमाज़े क़ज़ा हो गईं और उसका इन्तक़ाल हो गया तो अगर नमाज़ो के बदले फिदया देने की वसीयत कर गया है और माल भी छोड़ा है तो उसके माल की तिहाई से हर फर्ज़ नमाज़ और वितर के बदले आधा साअ गेहूँ सदक़ा करें निस्फ साअ गन्दुम का 2 कि. 47 ग्रा. हुआ या इस क़दर गेहूँ की क़ीमत मिसकीन को दें और अगर वसियत नहीं की और वारिस नमाज़ों के बदले फिदया देना चाहे तो बतौर एहसान दे सकते हैं, और अगर माल भी नहीं छोड़ा तो वारिस अगर देना चाहें तो कुछ माल बतौर एहसान अपने पास से किसी मिसकीन को सदका करें फिर मिसकीन अपनी तरफ से इस माल को हिबा कर दे और लेने वाला क़ब्ज़ा भी करले फिर मिसकीन को दे इसी तरह लौट फेर करते रहें यहाँ तक कि सब नमाज़ों का फिदया अदा हो जाए।

अगर मरने वाले ने माल छोड़ा और अपनी फौत शुदा नमाज़ों का फिदया देने की वसीयत की तो उसके माल की तिहाई से फिदया अदा करना लाज़िम है वसीयत की अदाएगी के बाद वारिस तरका तक़सीम कर सकते हैं माल और वसीयत के होते हुए ऊपर लिखा तरीक़ा नहीं अपना सकते। अल्लाह तआला अज़्ज़ा वजल्ला अच्छे अमल की तौफीक अता फरमाए आमीन।

एक ग़लत फहमी का इज़ाला

कुछ नावाक़िफ क़ज़ाए उमरी शबेक़दर या आख़िर जुमा रमज़ान मुबारक शबे बरात यानी पन्द्रवी शाबान की रात में जमात से कहीं बग़ैर जमाअत दो या चार रकात नमाज़ पढ़ते है और यह समझते हैं कि यह क़ज़ाए उमरी है सारी उम्र की क़जा नमाज़े इसी एक नमाज़ से अदा हो गई यह ग़लत और बातिल महज़ है जब तक तमाम नमाज़ों की क़ज़ा अलग अलग अदा न करेंगे बरी उज़ ज़िम्मा नहीं होंगे।

पिन्दहा दादेम आख़िर शुद फराग़
मा अलयना या अख़ी इलल्ल बलाग़

अल्लाह तआला अज़्ज़वजल्ला हम सब को हुस्ने अमल की तौफीक़ अता फरमाए आमीन

وصلی اللہ تعالیٰ علیٰ خیر خلقہٖ محمدٍ وّ آلہٖ واصحابہٖ اجمعین

दुआओं का तालिब

मोहम्मद समीउद्दीन रज़वी